जय आत्म आनंद देवेन्द्र जय गुरू उमेशाचार्य जय जिनेंद्र जय सौभाग्य सुर्य कान गुलाब

कैसे थे महावीर?

संकलन

पू.श्री राजेशमुनिजी म.सा.

पू.श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा.

श्रुत दान दाता

श्रीमती रमकुबाई चांदमल छाजेड

सौ.सुरेखा संजय छाजेड श्री.संजय चांदमलजी छाजेड

चि.संकेत संजय छाजेड कु.एश्वर्या संजय छाजेड

प्रस्तावणा

भगवान महावीर स्वामी के चरणोंमे कोटी कोटी वंदन करते हुअे,आज मुझे जीवन की सबसे बडी खुशी हो रही है की,मेरे जैसे सामान्य और अजैन को पू.श्री राजेशमुनिजी म.सा.एवं पू.श्री.राजेंद्रमुनिजी म.सा.की पावन हाथो से एवं तेजोमय दृष्टी से संकलन की गयी **'कैसे थे महावीर'** इस पुस्तीका के प्रस्तावना करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

पू.श्री राजेशमुनिजी म.सा.के शहादा मे आयोजीत चार्तुमास की अनेक विशेषताऐं रही है,जिसमे महावीर भवन मे आयोजीत व्याख्यान हो या भाग्यशाली बंधुओ के घर रात के जाप,एकासन के पारणे,विविध तपस्या,दशहरे के दिन बडी मांगलिक और जीवन की सबसे न्यारी,अनोखी दिवाली जो आनेवाले कितने सालो तक हम ऐसी दिवाली मनाने के लिए तरसेंगे.ऐसी दिवाली हमने पू.श्री.राजेशमुनिजी म.सा.के सानिध्य मे मनाई.कई घटनायें इस चातुर्मास मे घटी है,शहर मे भक्तीमय एवं धार्मीक वातावरण निर्मीती का पुरेपूर श्रेय पू.श्री.राजेशमुनिजी म.सा.को ही जाता है । उसी धार्मीक कडी का मुख्य भाग इस चातुर्मास मे रहा है वह पू.श्री.राजेशमुनिजी म.सा.के.अभिग्रह का है । म.सा.ने कठिण से कठिण अभिग्रह करना और शहादा वासीयोंने उसे बडी श्रद्धा एवं विनम्रता के साथ अभिग्रह फलाने के लिए सभी तरह की धार्मीक ताकत एवं विविध शक्कल लढके अभिग्रह फलाना यह मुख्य आकर्षण इस चातुर्मास मे रहा है । पू.श्री.राजेशमुनिजी म.सा.ने कोई उच-निच देखी नही या कोई श्रीमंत-गरीब ऐसा भेद रखा नही.सभीको उनकी पुण्यवाणी से बोलो या म.सा.की दिव्यदृष्टी बोलो सभी को किसी ना किसी बहाणे से लाभ देणे का पुर्ण प्रयास करते हुये देखने को मिला है ।

'कैसे थे महावीर' यह पुस्तीका के साहित्य का संकलन पू.श्री.राजेशमुनिजी म.सा.एवं पू.श्री राजेंद्रमुनिजी म.सा.इन्होनें किया है । और इस पुस्तीका मे छपी सभी साहित्य का प्रचार -प्रसार होकर सभी धर्म प्रेमी बंधु -बहनें को धार्मीक ज्ञान प्राप्त हो यह सुविचार हमारे मित्र श्रीमान संजयजी चांदमलजी छाजेड इनके मन मे आया और उन्हीके आर्थिक मदत से यह पुस्तीका आपके हाथो मे आयी है । इस पुस्तीको छपाने के लिए बहुत कम समय मिला है.उसी कारण कुछ शब्दोंमे,प्रिंटींगमे गलतीया हुअी हो तो सभी धर्मप्रेमी उन शब्दो को सुधारकर पढने की कृपा करे । पुन्हश्च शहादा के इतिहास मे इस चार्तुमास की उमटी हुअी निशानीयाँ हम सभी को प्रगती के मार्ग पर लें जाए,हम सभी धर्म आराधना से जुड जाऐं यही पू.श्री राजेशमुनिजी म.सा.को इस चार्तुमास की गुरूदक्षिणा होगी ।

जय जिनेंद्र

पुरूषोत्तम शिंपी,शहादा (महाराष्ट्र)

सन २०१२ के राजेशमुनीजी एवंम् राजेंद्रमुनीजी म.सा.के चार्तुमास की झलकियाँ ।

१) राजेंद्रमुनीजी के १९० दिन के मौन के अवसर पर ३०० से अधिक उपवास ।

२) संवत्सरी के दिन ६०० पौषध ।

३) एक दिन में ३०० से अधिक दया ।

४) सामुहिक तेले ३०० से अधिक

५) शहादा के इतिहास में सर्वाधिक ५५१ से अधिक एकासन ---- लाभार्थी सुमतिलालजी सुरजमलजी खिंवसरा ।

६) १०० से अधिक लोगो ने जमीकंद, रात्रीभोजन, कच्चापानी का त्याग किया ।

७) प्रथम पर्युषण में बाबुलाल महेंद्रकुमारजी बागरेचा (खेतश्री परीवार) व्दारा दया, पारणे का लाभ ।

८) शहादा के इतिहास में पैदल संघ पहलीबार जिसमें ५०० से अधिक लोगों ने भाग लिया ।

९) दादावाडी से समताभवन, समता भवन से महावीर भवन प्रवेश ।

१०) १२ साल की लडकी दिशा हसमुखलालजी भंसाली व्दारा मासखमण ।

११) ऐतिहासीक ओलीजी की आराधना, इतिहास में पहली बार घर - घर पर ।

१२) लिना प्रदिपजी टाटीया व्दारा ६ दिन में प्रतिक्रमण ।

१३) जिनेश चंपालालजी कोटडिया और निलेश मनोजजी बाफना व्दारा छोटी उम्र में अठाई की तपस्या ।

१४) लगातार ६८ दिनों तक सेकडों लोगों व्दारा नवकार मंत्र का एक घंटा जाप ।

१५) अजैन भाई पुरूषोत्तमजी शिंपी के निवास स्थान पर १००० से अधिक लोगों व्दारा रात्री में एक घंटे का जाप सत्पन्न ।

१६) प्रथम पर्युषण में दोनो संतों व्दारा ९ उपवास ।

१७) साबद्रा परीवार में २ मासखमण और ४ अठाई की आराधना ।

१८) राष्ट्रीय स्तरीय परीक्षा सुशिल समाधान-भाग ५ का आयोजन ।

१९) राजेंद्रजी साबद्रा ब्दारा ५८ साल की उम्र में मासखमण।

२०) जैन जल, शांतिलालजी (लुंकड परीवार) ब्दारा मुफ्त में स्थानक को जल सेवा।

२१) विजय टेन्ट (विजयकुमारजी राखेचा) ब्दारा मुफ्त टेंट।

२२) मिनाबाई अरूणजी कुचेरीया ब्दारा जैन प्लाझा पे थांदला संघ का अद्भुत सम्मान।

२३) पैदल संघ का स्वल्पहार प्रकाशजी, पारसजी, प्रमोदजी, अनिलजी चोपडा ब्दारा एवं भोजन बाबुलालजी महेंद्रकुमारजी बागरेचा ब्दारा।

२४) दशहरा एवं पडवा की भव्य मंगलीक का आयोजन विजयजी राखेचा एवं श्रीमती मदनबाई मानमलजी साबद्रा ब्दारा।

२५) रात्री जाप में रायचंदजी डुंगरवाल ब्दारा नियमित सामायिक।

२६) श्री. सोहनराजजी कोटडीया ब्दारा ८५ साल की उम्र में चौवीहार ९ उपवास।

२७) राजेशमुनीजी ब्दारा मात्र ४० दिन आहार। ५ माह में

२८) राहुल छोरीया (माताजी पवनबाई छोरीया) ब्दारा प्रतिक्रमण वालों का सम्मान।

२९) स्मिता पारसजी कुचेरीया ब्दारा कार्यक्रमोका सफल संचालन।

३०) लाभचंदजी गेलडा ब्दारा एवं नियमित प्रवचन आदि लाभ लेने वालों को प्रभावना।

३१) सामुहिक ओलीजीमें १५० से अधिक व्यक्तियों ब्दारा आराधना।

३२) विनयजी गांधी ब्दारा पच्चक्खान अंगुठी भेट।

३३) नेहा उत्तमचंदजी कोटडीया ब्दारा नंदीकंठस्थ।

३४) दीपावली पर माधुरी निखील साबद्रा ब्दारा सजोडे अठाई।

३५) श्रीराम कॉलनी में श्रीरामपूर संघने सुरेशजी बैद इनके यहाँ जापमें भाग लिया।

३६) आनंद प्रश्नमंच - निलेश, अजयजी छाजेडब्दारा।

३७) अजैन तुकारामजी पाटील, बशीरभाई मन्सुरी, शरदजी वाणी, काशिनाथजी ब्दारा नियमित प्रवचन लाभ।

३८) दिप्ती उत्तमजी चोरडीया ने अनुत्तरोववाई किया।

३९) अनेकोंने सुखविपाक सिखा।

भ. महावीर स्वामी की संक्षीप्त जिवन झाँकी
पुर्व भव का परिचय

१.	महत्वके प्रमुख भव	:	२७ भव
२.	सम्यक दर्शन किस भव में	:	नयसार के भव मे
३.	नयसार कौन था ?	:	गाँव का मुखीया
४.	सम्यक दर्शन किस कारण	:	मुनिको निर्दोष आहार देकर मार्ग बतानेसे
५.	देवलोक मे कौनसे भव	:	२,४,७,९,११,१३,१५,१७,२४,२६
६.	नरक में कौनसे भव	:	१९,२१
७.	मनुष्यमे कौनसे भव	:	१,३,५,६,८,१०,१२,१४,१६, १८,२२,२३,२५,२७
८.	तिर्यचमे कौनसे भव	:	२०
९.	विशिष्ट भव	:	
	i. ३ रा मरिचीका	:	श्री भारत चक्रवर्तीका पुत्र बनकर कुलका अभिमान करनेसे नीच गोत्रका बंध एवं मिथ्या मतकी स्थापना की !
	ii. १६ वा विश्वभुती का	:	मिथ्यां (परिव्राजक) धर्म को छोड सम्यक दर्शन प्राप्त करके दिक्षा ग्रहण की
	iii. १८ वा त्रिपृष्ठ वासुदेव का	:	१ ले वासुदेव बने, उनके कहनेसे शैय्या पालकके कानोमे गरम सीसा डालकर निकाचित कर्मोका बंध किया जो आखरी भवमें भोगना पडा।
	vi. २० वा भव सिंह का	:	मुनि उपदेश से श्रावक व्रत ग्रहण किया
	v. २३ वा प्रियमित्र चक्रवर्तीका	:	चक्रवर्ती बन दिक्षा लेकर १ करोड वर्ष तक संयम की कठोर साधना की

vi. २५ वा नंदन राजकुमार का	:	११६०००० मासक्षमण से अधिक के साथ अपूर्व क्षमा, सेवा और दान की उच्चतर साधना
तीर्थकर कैसे बने	:	२० स्थानक तप के श्रेष्ठ आराधनसे तीर्थकर नाम कर्म का उपार्जन किया।
vii. २६ वा भव	:	१० वे प्राणत देवलोकसे २० सागरोपम की आयु पुर्ण करके देवानंदा के गर्भमें आये।

च्यवन कल्याणकका परिचय

१. च्यवन मास एवं तिथी (गर्भधारण दिन)	:	आषाढ सुदी ६ विक्रम सवंत पुर्व ५४४ १७ जुन इ.स.पू. ६००
२. च्यवन स्थल	:	भरत क्षेत्र का ब्राम्हणकुंडग्राम नगर
३. च्यवन नक्षत्र	:	उत्तरा फाल्गुनी
४. च्यवन राशी	:	कन्या
५. च्यवन काल	:	मध्यरात्री
६. गर्भधारक प्रथम माता	:	जालंधर गोत्रीय देवानंदा ब्राम्हणी
७. प्रथम पिता	:	कोडाल गोत्रीय ऋषभदत्त ब्राम्हण
८. देवानंदाको कितने स्वप्न आये	:	१४ स्वप्न
९. उनके फल किसने कहे	:	पति ऋषभदत्तने
१०. च्यवन समय ज्ञान	:	मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधिज्ञान
११. पुर्वजन्मसे कितना श्रुतज्ञान लाया	:	११ अंग आगमशास्त्र जितना
१२. देवानंदा को गर्भहरण कब ?	:	८३ वे दिन
१३. गर्भकाल कितना ?	:	८२ दिन या २ मास २२ दिन
१४. गर्भधारक व्दितीय माता	:	वसिष्ठ गोत्रीय क्षत्रियाणि त्रिशला
१५. व्दितीय पिता	:	काश्यप गोत्रीय सिध्दार्थ राजा
१६. गर्भहरण किसने किया	:	इन्द्र की आज्ञासे हरिण गमेषी देव ने
१७. किस कारण किया	:	भिक्षुक कुल से कारण

१८. त्रिशला माँ ने कितने स्वप्न देखे	:	१४ स्वप्न
१९. उनके फल किसने कहे	:	पति सिध्दार्थ तथा स्वप्नफल पाठकोने
२०. दूसरे माताका गृह स्थान	:	भरत क्षेत्रमें क्षत्रिय कुंडग्राम नगर
२१. दूसरे गर्भ मे कब आये	:	भाद्रपद वद्य १३ विक्रम संवत पुर्व ५४४
२२. त्रिशला के गर्भ मे कितने काल	:	६ मास १५॥ दिन
२३. संपुर्ण गर्भकाल कितला	:	९ मास ७॥ दिन
२४. देवानंदाको स्वप्नफल क्यो नही मिला	:	पूर्व के ममताके भवमें हार की चोरी करने के कारण
२५. गर्भ के प्रभाव से क्या दोहद उत्पन्न हुए ?	:	दान देनेके, सद्‌गुरूओको आहार देनेका कैदियोको मुक्त करनेका शासन संचालन करनेका, इन्द्राणीके कानो के कुंडल पहननेका आदि जो राजा सिध्दार्थने पूर्ण किए।
२६. गर्भ में प्रतिज्ञा	:	मातृस्नेह के कारण प्रतिज्ञा की की माता पिताके जीवित रहने तक दिक्षा अंगीकार नही करूंगा।

जन्म कल्याणका तथा गृहस्थवासका परिचय

१. जन्म मास एवं तिथी	:	चैत्र शुक्ल १३, विक्रम संवत पूर्व ५४३ सोमवार, २७ मार्च इ.स.पू. ५९९
२. जन्मसमय	:	मध्यरात्री
३. जन्मनक्षत्र	:	उत्तरा फाल्गुनी
४. जन्मराशी	:	कन्या
५. जन्मदेश	:	भारत
६. जन्मप्रदेश	:	विदेह (वर्तमान बिहार)
७. जन्मदेशकी राजधानी	:	वैशाली
८. जन्मनगर	:	क्षत्रियकुंडग्राम-नगर
९. जन्म कौनसे आरेमें	:	चौथे आरेमे

१०. जन्म समय आरा कितना बाकी	:	७५ वर्ष ८॥ मास
११. जाति	:	ज्ञात क्षत्रिय
१२. कुल	:	ज्ञात कुल
१३. वैश	:	ज्ञात वैश (इश्वाकु)
१४. गोत्र	:	काश्यप
१५. नाम	:	वर्धमान, महावीर, वीर, अतिवीर, ज्ञातपुत्र, सन्मति, विदेह, वैशालिक, काश्यप, देवार्य,
१६. लांछन	:	सिंह
१७. देहकी रूप कांती	:	सर्व रूपसे सुंदर, सर्वश्रेष्ठ कान्ती
१८. शारिरीक शुभ लक्षण कितने	:	१००८
१९. शारिरीक बल कितना	:	अनंत
२०. संहनन (अस्थि-संधी रचना)	:	पहला वज्रऋषभनाराच
२१. शरीर प्रमाण (युवावस्थामें)	:	७ हाथ (संपुर्ण विकसीत)
२२. संस्थान (शरीरका माप)	:	पहला समचतुरस्त्र
२३. मस्तककी विशेषता	:	शिखा स्थान बहुत उन्नत
२४. देहके रक्तका वर्ण	:	गाय के दुध समान श्वेत
२५. देह वर्ण	:	तपे हुए सोने जैसा
२६. ज्ञानाभ्यास	:	८ वर्ष की उमरमे उपाध्यायके पास गए
२७. जन्म का प्रसंग	:	बाए पैरके अंगुठे से मेरुपर्वत हिलाया
२८. बचपन का प्रसंग	:	सांखली का खेल, मुष्टी प्रहार
२९. विवाह किसके साथ किया	:	यशोदा राणी (समरवीर की पुत्री)
३०. संतानका नाम	:	प्रियदर्शना
३१. दिक्षा की अनुमती	:	बडे भाई नंदिवर्धनके पाससे
३२. दिक्षा के लिए देवोकी विनंती	:	२९ वर्ष की उमरमें
३३. वर्षी दान कितना किया	:	३ अरब ८८ करोड ८० लाख सुवर्णमुद्रा
३४. गृहस्थाश्रमका काल	:	३० वर्ष
३५. राज्यकाल	:	राज्य नही किया
३६. कुटूंब परिचय	:	आगे पेज पर

सगपण	नाम	स्थलनाम	गोत्र
प्रथममाता	देवानंदा	ब्राम्हणकुंड	जलंधर
प्रथमपिता	ऋषभदत्त	ब्राम्हणकुंड	कोडाल
माता	त्रिशला	विदेह जनपथ	वसिष्ठ
पिता	सिध्दार्थ	क्षत्रियकुंड	काश्यप
जेष्ठ भ्राता	नंदिवर्धन	क्षत्रियकुंड	काश्यप
भाभी	जेष्ठा	विदेह	वसिष्ठ
बहन	सुदर्शना	क्षत्रियकुंड	वसिष्ठ
पत्नी	यशोदा	--	कौडीन्य
पुत्री	प्रियदर्शना	क्षत्रियकुंड	काश्यप
पौत्री	शेषवती	क्षत्रियकुंड	--
जमाई	जमाली	क्षत्रियकुंड	--
चाचा	सुपार्श्व	क्षत्रियकुंड	काश्यप
नाना	केक	विदेह	वसिष्ठ
नानी	यशोमती	विदेह	वसिष्ठ
मामा	चेटक	विदेह	वसिष्ठ
मामी	पृथा	विदेह	वसिष्ठ
फुफा	जितशत्रु	कलिंग	--
सास	यशोदरा	--	कौडिन्य
ससुर	समरवीर	--	कौडिन्य
मामाकी बेटी	मृगावती-शतानीक	कौशाम्बी	वसिष्ठ
मामाकी बेटी	सुप्रभा-चळप्रदयोत	दर्शाण	वसिष्ठ
मामाकी बेटी	प्रभावती-उदायन	सिंधु	वसिष्ठ
मामाकी बेटी	चैलणा-श्रेणीक	मगध	वसिष्ठ
मामाकी बेटी	जेष्ठा-नंदिवर्धन	विदेह	वसिष्ठ
मामाकी बेटी	धारिणी-दधिवाहन	--	वसिष्ठ
भांजी	चंदना-धारिणी की बेटी	--	--

दिक्षा कल्याणक का परिचय

१.	दिक्षा, मास, तिथी, संवत	: कार्तिक वदी १० वि.स.पू. ५१३ सोमवार २३ दिसंबर इ.स.पू. ५६९
२.	दिक्षा समय	: दिनका चौथा प्रहार
३.	दिक्षा नक्षत्र	: उत्तरा फाल्गुनी हस्तोत्तर
४.	दिक्षा राशी	: कन्या
५.	दिक्षा समयपर आयु	: ३० वर्ष
६.	दिक्षा के दिन ताप	: छट्ट (बेला)
७.	दिक्षा महायात्राकी शिवीका	: चंद्रप्रभा नामक उत्तम शिवीका
८.	दिक्षा किस ग्राममे ली	: क्षत्रियकुंड
९.	दिक्षा किस वनमे ली	: ज्ञात वनमें
१०.	दिक्षा किस वृक्ष के निचे ली	: अशोक वृक्ष के निचे
११.	दिक्षा लोच कितनी मुष्ठीसे	: खुद पंचमुष्ठी से
१२.	कितनो के साथ दिक्षा ली	: अकेले ही थे
१३.	दिक्षामे कितने महाव्रत लिए	: अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रम्हचर्य, अपरिग्रह (५)
१४.	व्रतोच्चारण बाद कौनसा ज्ञान	: चौथा मन: पर्यवज्ञान
१५.	प्रथम विहार	: उसी दिन कुर्मारग्राम
१६.	प्रथम उपसर्ग	: कुर्मारग्रामके ग्वालोने
१७.	प्रथम पारणा किससे	: खीर से
१८.	कब किया ?	: दिक्षा के दुसरे दिन
१९.	कहा किया ?	: कोल्लाग सन्नीवेश में
२०.	किसने कराया ?	: बकुल नामक ब्राम्हण के घर में
२१.	प्रथम आहार किसमें लिया	: हाथ में
२२.	छद्मस्थ काल कैसे लिया	: साडे बारह वर्ष १५ दिन
२३.	देवदुष्य वस्त्र कैसे लिया	: बाए कंधे पर
२४.	दिक्षा किस प्रकार धारण की ?	: सामायिक चरित्र स्वीकार कर

साधना काल की मुख्य घटणाए

१.	साधना काल का क्षेत्र	: पूर्व एवं उत्तर भारतका प्रदेश
२.	साधना कालमे कितना तप	: ४१६६ दिनका जलरहित उपवास
३.	उत्कृष्ठ तप कौनसा किया ?	: ५ मांस २५ दिनका
४.	अभिग्रह कितने किये ?	: विविध प्रकारके
५.	पारणाके दिन कितने ?	: ३४९ दिन
६.	साधनामे निद्राकाल कितना था	: अन्तमुहूर्त = २ घडी = ४८ मिनिट
७.	साधना किस आसनमें की	: ज्यादातर खडे कार्योत्सर्ग में
८.	छद्मस्थ अवस्थामें वर्षावास	: १२
९.	साधनाकाल वर्ष	: इ.स.पू.५६९-५५७, वि.स.पू. २-५१२-५००
१०.	साधनाकालीन प्रथम कार्य	: सोम ब्राम्हण को वस्त्रदान
११.	साधनाकालमें उपसर्ग कष्ट	: देव, मनुष्य, तिर्थच व्दारा, शुलपाणी यक्ष चंडकौशीक, गंगामे तुफान चोराक सन्निवेशमे यातना, हलिददुग वृक्ष के निचे कष्ट, कल्लंबुका सन्नीवेशमे चोर समझकर यातना नाविकने रेतमे तपाया, संगमके २० उपसर्ग, मोढी गावके उपसर्ग भ्रमरका डंक, लाढ प्रदेशके उपसर्ग, कटपूतना व्यंतरी के उपसर्ग, वैशाली में उपहास, ग्वाले द्वारा कानोमे खिला
१२.	महावीरकी प्रतिज्ञाये	: १.अप्रितीकारक स्थानमे नही रहना २.सदा ध्यानस्थ रहना ३.मौन रहना ४.हाथमें भोजन करना ५.गृहस्थोका विनय करना
१३.	गोशालकका मिलन	: गोशालक ने बार-बार प्रार्थना करके गुरू बनाया पर वर्ग के कारण महावीर से अलग होकर आजिवक परंपरा चलाई।

केवलज्ञान कल्याणक एवं उसकी मुख्य घटनाए

१.	केवलज्ञान मास एवं तिथी	: वैशाख सुदी १०, विक्रम संवत पूर्व ५०१ रविवार २६ एप्रिल इ.स.पू. ५५७
२.	दिवसका नाम	: सुव्रत (शास्त्रीय नाम)
३.	मुहूर्त का नाम	: विजय (शास्त्रीय नाम)
४.	नक्षत्रका नाम	: उत्तराफाल्गुनी
५.	केवलज्ञानका समय	: चतुर्थ प्रहर - सायंकाळ
६.	केवलज्ञानके समयमे उम्र	: ४३ वर्ष
७.	केवलज्ञानका स्थान	: जांभीया ग्रामके बाहर ऋजुबालिका नदी
८.	केवलज्ञानके समय कोई शिष्य	: एक भी नही
९.	शरीर उपर वस्त्र थे ?	: नहीं
१०.	दुजा कुछ साथ रखा था	: नही, सर्वथा अपरिग्रही
११.	केवलज्ञानके समय राशी	: कन्या
१२.	केवलज्ञान पुर्व उपदेश देते थे	: नही, वार्तालाप संभव है
१३.	केवलज्ञान किस वृक्ष के निचे	: साल वृक्ष के निचे
१४.	केवलज्ञान किस आसनमे हुआ	: गोदोहिका आसन
१५.	अतिशय कितने	: ३४
१६.	वचनातिशय कितने	: ३५
१७.	केवलज्ञानके वक्त कौनसा तप	: छठ (बेला) तप
१८.	प्रतिहार्य कितने	: ०८
१९.	किन कर्मोका क्षय हुआ	: ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, अंतराय
२०.	केवलज्ञान होतेही क्या हुआ	: पूरा संसार प्रकाशीत हुआ देवताओका आसन डोला
२१.	देवताओने क्या किया	: कैवल्य - महोत्सव
२२.	केवलज्ञानका आश्चर्य	: १ ली धर्मदेशनामे किसीने चरित्र धर्म स्वीकार नही किया
२३.	केवलज्ञानके बादका विहार	: १२ योजनका विहार करके अपापा पधारे
२४.	केवलज्ञान का काल	: २९ वर्ष ५॥ मास
२५.	केवलज्ञान प्राप्तीका गुण	: अनुपम ज्ञान, दर्शन, चरित्र, संयम, विहार, निर्दोष निवास, वीर्य, सरलता, मृदुता, क्षमा, अपरिग्रहभाव, अलोभ, गुप्ती, संयम, सत्य, तप

तीर्थ स्थापना का परिचय

१.	तीर्थोत्पत्ती कब	: केवलज्ञान प्राप्तीके २ रे दिन
२.	तीर्थस्थापना मास एवं तिथी	: वैशाख सुदी ११ वि.स. ५०१ सोमवार २७ एप्रिल इ.स.पू. ५५७
३.	तीर्थ विच्छेद कब होगा	: ५ वे आरे के अंतिम दिन २ प्रहर बाद
४.	गणधर कितने	: ११
५.	प्रथम गणधर	: इन्द्रभुती गौतम
६.	प्रथम साध्वी	: चन्दनबाला
७.	प्रथम श्रावक	: शंख
८.	प्रथम श्राविका	: सुलसा
९.	प्रधान भक्त राजा	: मगधेश्वर-श्रेणिक (बिम्बिसार)
१०.	शासन यक्ष - याक्षिणी	; मातंग - सिध्दायिका
११.	सिध्दांत	: स्याव्दाद, अहिंसा, अपरिग्रह, अमैथुन
१२.	स्थापनादिन कितने शिष्य	: ४४११ एवं चंदना आदिसतियाँ
१३.	तीर्थस्थापना कहा	: अपापानगरी महासेन वनके समवसरणमें
१४.	गणधरोने कौनसा उपदेश सुना	: उत्पाद, ध्रुव, नष्ट (त्रिपदी)
१५.	त्रिपदी सुन गणधरोने क्या किया	: व्दादशंगीकी रचना की

धर्म परिवाका परिचय

१.	गणसंख्या	: ९
२.	गणधरसंख्या	: ११
३.	साधु	: १४००० (स्वहस्तदिक्षीत)
४.	साध्वी	: ३६००० (स्वहस्तदिक्षीत)

५. श्रावक : १,५९००० (१२ व्रतधारी)
६. श्राविका : ३,१८००० (१२ व्रतधारी)
७. केवल ज्ञानी : ७०० साधु, १४०० साध्वी
८. मन:पर्यवज्ञानी : ५००
९. अवाधिज्ञानी : १३००
१०. १४ पूर्वधर : ३००
११. वैक्रिय लब्धिधर : ७००
१२. वादि : ४००
१३. प्रकिर्णक एवं प्रत्येकबुध्द : १४००
१४. अनुत्तर विमानमे जानेवाले : ८००
१५. सामान्य मुनी : १००७९

जानने योग्य अनेक बात

१. देशना कहा देते थे ? : देवनिर्मित समवसरणंमे या सुवर्ण् कमलपर
२. प्रवचन रोज कितनी बार : सबेरे और दोपहर एक-एक प्रहर
३. किस भाषामे प्रवचन देते : अर्धमागधी - प्राकृत
४. शास्त्र किस भाषामे : अर्धमागधी - प्राकृत
५. १ ला पारणा करानेवालेकी गति : ३ रे भवमे मोक्ष
६. भिक्षा समयके ५ दिव्य : १. वस्त्र, २. सुगंधी द्रव्य, जलवृष्टी, ३. साडेबारा लाख करोड सोनैय्या की वृष्टी, ४. अहोदानकी घोषणा, ५. दुंदुभीनाद
७. शासनमे कितने लोगोने तीर्थंकर नाम कर्म बांधा : पुरुष एवं स्त्रीया मिलाकर ९
८. शासनमे रुद्र कौन हुए : सत्यकी
९. कोनसे दर्शनकी उत्पत्ती : वैशेषीक दर्शन
१०. आश्चर्यकारक घटनॉए : ५
११. साधुके महाव्रत : ५

१२. श्रावकके अणुव्रत : १२
१३. चारित्र के प्रकार : ५
१४. मुल तत्वो की संख्या : ३ या ९
१५. सामायिक व्रतके प्रकार : ४
१६. प्रतिक्रमण के प्रकार : ५
१७. षडावश्यक कितनी बार : सबेरे-शाम, नियमित २ बार
१८. संयम चारित्र के प्रकार : ७०
१९. आचारपालन कैसा : अति दुर्लभ
२०. मुनी के वस्त्र : सफेद एवं सामान्य कोटी के
२१. प्रजा का स्वभाव : वक्र एवं जड
२२. भगवानका विहार : पुर्वोत्तर भारत एखादबार पश्चिममे
२३. भक्त राजा : संख्यात

निर्वाण-मोक्ष कल्याणकका परिचय

१. मोक्षगमन मास एवं तिथी : कार्तिक अमावस्या वि,सं, पु. ४७१ मंगलवार १५ अक्तुबर इ,स,पु. ५२७
२. मोक्षसमयका नक्षत्र : स्वाती
३. राशी : तुला
४. उम्र : ७१ बरस ४ मास २५ दिन (७२ वर्ष लगभग)
५. संवत्सर : चन्द्र नामक २ रा संवत्सर
६. महिना : प्रितीवर्धन (शास्त्रीय नाम)
७. पक्ष : नंदीवर्धन
८. दिवस : अग्नीवेश्य अथवा उपशम
९. रात्री : देवानंदा अथवा निरती
१०. लय : अर्थ (शास्त्रीय नाम)
११. प्राण : मुहुर्त (शास्त्रीय नाम)
१२. स्तोक : सिध्द (शास्त्रीय नाम)
१३. करण : नाग (३ रा, शास्त्रीय नाम)

१४. मुहूर्त : सर्वार्थासिध्द

१५. स्थल : पावामध्यमा अपापापुरी (वर्तमान बिहारमे)

१६. स्थान : हस्तिपाल राजाके कर (TAX) शाला

१७. अंतिम देशना : अंखंड ४८ घंटे (१६ प्रहर) ५५ अध्ययन पुण्यफलाविपाक के ५५ अध्ययन पापाफलविपाकके, ३६ अध्ययन अपृष्ठ व्याकरण (उत्तराध्ययन सुत्र) के ३७ वा प्रधान नामक अध्ययन अपुर्ण रह गया

१८. मोक्षसमयका आसन : पर्यकासन अथवा पद्मासन

१९. मोक्षमे आत्माकी अवगाहना : ४ २/३ हाथ

२०. मोक्ष समयक तप : छट्ठ (बेला) तप

२१. मोक्ष कितनोके साथ : अकेले

२२. मोक्षंगमनका समय : पिछली रातका

२३. मोक्षवक्त ४ था आरा कितना : ३ वर्ष ८॥ मास शेष था

२४. कितने पाट मोक्षमार्ग चला : ३ पाट

२५. शासनमे मोक्षगमन कबसे : केवलज्ञानके ४ वर्ष बादसे

२६. २३ वे ओर २४ वे तीर्थकरमे अंतर : पार्श्वनाथके निर्वाणबाद २५० वर्ष बाद वीर प्रभु मोक्ष पधारे

२७. दिपमालोत्सव : ९ मल्लवी एवं ९ लिच्छवी राजओने यह सोचकर की अब भाव उद्योत तो चला गया अब द्रव्य उदयोग करना चाहिये तब मानव और देवताओने दिप जलाए और दिपावली मनाई

२८. महावीरप्रभु की निर्वाण यात्रा : प्रभु के पार्थीव देह को शिवीकामे रखकर देवोने दिव्य ध्वनी एवं पुष्पवृष्टी की इन्दोने शिवीका उठाई अग्नीकुमार देवोने आग प्रज्वलीत की वायुकुमार देवोने वायु प्रचलीत किया अन्य देवो ने धी एवं

शहद चितामे डाला चिता गोशीर्ष चंदनकी की मेघकुमारने वर्षा करके अग्नी शांत की

२९. महावीर स्वामी के अवशेष किसने लिए : दाढे शक्रेन्द्र, चमरेन्द्र, इशानेन्द्र एवं बलेन्द्र ने १-१ ली देवो ने दात एवं अस्थी ली, मानवोने भस्म ग्रहण करी

३०. चातुर्मास तालिका :

क.	स्थल	श्रमणजीवनका वर्ष	विक्रम संवत पूर्व वर्ष
१	अस्थिग्राम	साधना वर्ष १	५१० - ५११
२	नालंदा	साधना वर्ष २	५०९ - ५१०
३	चंपा	साधना वर्ष ३	५०८ - ५०९
४	पृष्ठचम्पा	साधना वर्ष ४	५०७ - ५०८
५	भद्रिका	साधना वर्ष ५	५०६ - ५०७
६	भद्रिका	साधना वर्ष ६	५०५ - ५०६
७	आलंभिका	साधना वर्ष ७	५०४ - ५०५
८	राजगृही	साधना वर्ष ८	५०३ - ५०४
९	प्रणित भुमी (अनार्य)	साधना वर्ष ९	५०२ - ५०३
१०	श्रावस्ति	साधना वर्ष १०	५०१ - ५०२
११	वैशाली	साधना वर्ष ११	५०० - ५०१
१२	चंपा	साधना वर्ष १२	४९९ - ५००
१३	राजगृही	कैवल्यवर्ष १	५०० - ४९९
१४	वैशाली	कैवल्यवर्ष २	४९९ - ४९८
१५	वाणिज्यग्राम	कैवल्यवर्ष ३	४९८ - ४९७
१६	राजगृही	कैवल्यवर्ष ४	४९७ - ४९६
१७.	वाणिज्यग्राम	कैवल्यवर्ष ५	४९६ - ४९५
१८	राजगृह	कैवल्यवर्ष ६	४९५ - ४९४
१९	राजगृह	कैवल्यवर्ष ७	४९४ - ४९३

क्र.	स्थल	श्रमणजीवनका वर्ष	विक्रम संवत पूर्व वर्ष
२०	वैशाली	कैवल्यवर्ष ८	४९३ - ४९२
२१	वाणिज्यग्राम	कैवल्यवर्ष ९	४९२ - ४९१
२२	राजगृह	कैवल्यवर्ष १०	४९१ - ४९०
२३	वाणिज्यग्राम	कैवल्यवर्ष ११	४९० - ४८९
२४	राजगृह	कैवल्यवर्ष १२	४८९ - ४८८
२५	मिथिला	कैवल्यवर्ष १३	४८८ - ४८७
२६	मिथिला	कैवल्यवर्ष १४	४८७ - ४८६
२७	मिथिला	कैवल्यवर्ष १५	४८६ - ४८५
२८	वाणिज्यग्राम	कैवल्यवर्ष १६	४८५ - ४८४
२९	राजगृह	कैवल्यवर्ष १७	४८४ - ४८३
३०	वाणिज्यग्राम	कैवल्यवर्ष १८	४८३ - ४८२
३१	वैशाली	कैवल्यवर्ष १९	४८२ - ४८१
३२	वैशाली	कैवल्यवर्ष २०	४८१ - ४८०
३३	राजगृह	कैवल्यवर्ष २१	४८० - ४७९
३४	नालंदा	कैवल्यवर्ष २२	४७९ - ४७८
३५	वैशाली	कैवल्यवर्ष २३	४७८ - ४७७
३६	मिथिला	कैवल्यवर्ष २४	४७७ - ४७६
३७	राजगृह	कैवल्यवर्ष २५	४७६ - ४७५
३८	नालंदा	कैवल्यवर्ष २६	४७५ - ४७४
३९	मिथिला	कैवल्यवर्ष २७	४७४ - ४७३
४०	मिथिला	कैवल्यवर्ष २८	४७३ - ४७२
४१	राजगृह	कैवल्यवर्ष २९	४७२ - ४७१
४२	पावा मध्यमा अपापापूरी (पावापूरी)	कैवल्यवर्ष ३०	४७१ - ४७०

त्रीशला माता के १४ स्वप्न

भ. महावीर जब माताके गर्भ् में आये, तब उन्होने १४ स्वप्न देखे व इस प्रकार है

१४ स्वप्न

१. गज (हाथी)
२. वृषभ (बैल)
३. सिंह
४. लक्ष्मीदेवी
५. पुष्पमाला
६. पुर्णचंद्र
७. सुर्य
८. धर्मध्वजा
९. मंगलकलश
१०. पद्मसरोवर
११. क्षीरसागर
१२. देवविमान
१३. रत्नराशी
१४. अग्निशिखा

११ गणधर

१. ईन्द्रभुतीजी
२. अग्निभुतिजी
३. वायुभुतिजी
४. व्यक्तस्वामी
५. सुधर्मास्वामी
६. मण्डीतस्वामीजी
७. मौर्यपुत्रजी
८. अकम्पीतजी
९. अचलभ्रताजी
१०. मेतार्यजी
११. प्रभासजी

१० श्रावक

१. आनन्द
२. कामदेव
३. चुलनीपिता
४. सुरादेव
५. चुल्लशातक
६. कुंडकौलीक
७. सकडालपुत्र
८. महाशतक
९. नंदिनीपिता
१०. शालिहीपिता

भगवान महावीर के २७ भव

नयसार
सौधर्म (पहेला देवलोक)
मरिची (ऋषभदेव के पोते)
ब्रम्हदेवलोक (पाचवा)

कोशिक ब्राम्हण	पुष्पमित्र ब्राम्हण
सौधर्म (पहेला देवलोक)	अग्निद्योत ब्राम्हण
ईशान (दुसरा देवलोक)	अग्निभुत ब्राम्हण
सनथकुमार	भारव्दाज ब्राम्हण
महेंद्र (चौथा देवलोक)	स्थावर ब्राम्हण
ब्रम्ह (पाचवा देवलोक)	विश्वभुती युवराज
महाशुक	त्रिपृष्ठ वासुदेव
७ वी नारकी	सिंह
चतुर्थ नरक	विमल राजकुमार
प्रियमित्र चक्रवर्ती	महाशुक (७ वा देवलोक)
नंदन राजकुमार	प्राणत (दसवा देवलोक)
महावीर भगवान	

१० स्वप्न (भगवानने ४८ मिनीट के निद्रा मे देखे हुए)

१. एक भयंकर रूपवाले ताड वृक्ष के समान पिशाच्च को पराजीत देखा
२. महान सफेद पंखवाले पुष्कोकिल अर्थत पुरूष जाती के कोकील को देखा
३. एक महान विचित्र रंग के पंखवाले पुष्कोकिल को देखा
४. एक महान स्वर्नरत्नमय मालायुगल (२ माला) को देखा
५. एक विशाल श्वेत गायोंको झुंड को देखा
६. चारो तरफ खिले हुए फुलोवाले विशाल पद्मसरोवर को देखा
७. हजारो लहरो और कल्लोलो से युक्त एक महान सागर को भुजाओसे चिरकर पार पहुचे हुऐ देखा
८. अत्यंत तेज से ज्वाजल्यमान सुर्य को देखा
९. मानुष्योत्तर पर्वत निल वैधुर्यमणी के समान अपने अंतर्भाग में चारोतरफ से आवेष्टीत और परिवेषित देखा
१०. सुमेरू पर्वत की मंदर चुलीका नामकी चोटी पर श्रेष्ठ सिंहासन पर बैठे हुए अपने आप को देखा.

अठाई से उपर की तपस्या

१) श्रीमती उज्ज्वलाजी चोरडीया	८	३१) सौ. विमलाबाई बाबुलालजी बागरेचा	९
२) श्री वर्धमान महेन्द्रजी ओस्तवाल	८	३२) कु. अपेक्षा राणूलाल संचेती	९
३) मयुरजी अरूणजी कुचेरीया	८	३३) सौ. शितलजी नितीनजी पारख	९
४) जिनेशजी चंपालालजी कोटडीया	८	३४) श्री. सोनराजजी कोटडीया	९
५) श्री. सुरेशजी दिपचंदजी छाजेड	८	३५) श्री.ॲड. प्रदीपजी माणकलालजी टाटीया	९
६) श्री. पारसमलजी शिवलालजी सुराणा	८	३६) श्री. पारसमलजी चतरमलजी बोथरा	९
७) श्री. कुशलकुमारजी रमेशचंदजी बेद	८	३७) श्री. आशिषजी सुरेशचंदजी भंसाली	९
८) सौ. ताराजी अशोकचंदजी कोटडीया	८	३८) श्री. कुनालजी विजयकुमारजी डुंगरवाल	९
९) सौ. सुवर्णाजी अनिलजी चोपडा	८	३९) चि. राकेश इंदरचंदजी कोचर	९
१०) सौ. सरिताजी प्रकाशचंदजी चोपडा	८	४०) वर्धमान महेन्द्रकुमार जैन	९
११) सौ. वंदनाजी सुरेशजी चोरडीया	८	४१) श्री. निखिलजी राजेंद्रकुमारजी साबद्रा	९
१२) सौ. मिनाबाई पुनमचंदजी भंडारी	८	४२) सौ. रूपालीजी कल्पेशजी गेलडा	११
१३) श्री. पुनमचंदजी लालचंदजी भंडारी	८	४३) सौ. किर्तीजी संजयजी चोरडीया	११
१४) सौ. मनिषाजी उत्तमचंदजी चोरडीया	८	४४) सौ. संगीताजी दलीचंदजी कोठारी	११
१५) सौ. निलम नागोबा सोलंकी (खेतश्री)	८	४५) सौ. प्रियाजी आलोकजी गेलडा	११
१६) सौ. उर्मिलाजी प्रविणजी ओस्तवाल	८	४६) सौ. शितलजी अमितजी गेलडा	११
१७) सौ. कमलाबाई रमेशजी चोरडीया	८	४७) सौ. भवरीबाई सतीशजी भंडारी	११
१८) सौ. छायाजी किशोरजी बाफना	८	४८) सौ. निताजी खुशालजी गोलेच्छा	११
१९) श्री. नरेंद्रजी मुलचंदजी चोरडीया	८	४९) श्री. चंपालालजी मिश्रीलालजी कोटडीया	१३
२०) श्री. रूपेशजी दलीचंदजी कोठारी	८	५०) सौ. कविता विनयजी संचेती	१७
२१) सौ. सोनलजी दिपकजी बाफना	८	५१) सौ. चंद्रकलाजी गिरिशजी सिसोदिया	२१
२२) सौ. भविशाजी मनोजजी बोथरा	८	५२) सौ. ज्योतीबाला निलेशजी छाजेड	२७
२३) कु. चंचल कोठारी (सुलवाडा)	८	५३) कु. दिशाजी हसमुखजी भंसाली	३०
२४) सौ. ममता मनोजजी कोटडीया	८	५४) कु. पुजा विजयजी छाजेड	३१
२५) श्रीमती मनिषाजी संजयजी कोचर	८	५५) सौ. प्रमिला सुभाषचंद संकलेचा	३१
२६) चि. निलेश मनोजजी बाफना	८	५६) सौ. कल्पना अजितजी साबद्रा	३१
२७) सौ. माधुरी निखिलजी साबद्रा	८	५७) श्री. राजेंद्र मानमलजी साबद्रा	३१
२८) श्री. वर्धमानजी ओस्तवाल	८	५८) सौ. रूपाली प्रमोदजी गेलडा	३५
२९) सौ. रेखाजी पारसजी सुराणा	९	५९) सौ. वनिता राणूलालजी संचेती	७
३०) सौ. कंचनबाई सुभाषजी गेलडा	९	६०) सौ. रूपाली प्रमोदजी गेलडा	९

एकासन करवानेवाले महानुभव

१) सुमतिलालजी सुरजमलजी खिंवसरा
२) आखेराजजी आसकरणजी चोपडा
३) इंदरचंदजी मंगलचंदजी कोचर
४) सौ. सुरेखाबेन संजयजी छाजेड
५) चंद्रभानजी रमेशचंदजी टाटीया (निलेश, अर्पीता, मनोजजी बाफना)
६) राजेंद्रजी, अजितजी साबद्रा
७) सौ. पिस्ताबाई विजयकुमारजी राखेचा
८) मिराबाई जसराजजी बागरेचा एवं श्रीमती प्रमिला जव्हरीलालजी चोपडा
९) सौ. कंचनबाई सुभाषजी गेलडा
१०) सौ. ज्योती जसराजजी संचेती
११) राजेंद्रजी कांतीलालजी छाजेड
१२) ताराचंदजी भरतजी ढेलडीया
१३) भिकमचंदजी, किशोरचंदजी, अशोकचंदजी, धनराजजी बाफणा
१४) श्रीमती हेमलता सुभाषजी छाजेड, सौ. स्मिता भुषणजी छाजेड, सौ. श्रध्दा राहूलजी छाजेड
१५) श्री. प्रकाशचंदजी महावीरचंदजी गेलडा
१६) श्रीमती रमकुबाई छाजेड, सौ. आरती अनिलजी छाजेड
१७) सौ. चंद्रकलाजी दगडुलालजी ललवाणी
१८) महेंद्रकुमारजी बाबुलालजी बागरेचा
१९) सुरेश दिपचंदजी छाजेड (पारणा)
२०) श्रीमती मदनबाई मानमलजी साबद्रा

प्रतिक्रमण

१) महेंद्रजी बागरेचा	२) गुंजन दुग्गड
३) सौरभ खिंवसरा	४) लिना टाटीया
५) जया ओस्तवाल	६) दर्शन चोपडा
७) निलेश बाफना	८) निकीता साबद्रा
९) दिपीका बाफना	१०) विक्की कोटडीया
११) बबीता बागरेचा	१२) दिक्षीता बागरेचा
१३) वर्षा कोटडीया	१४) मुस्कान कुचेरिया

१) जो शत्रुओं को जीत ले उसे वीर कहते है,
जो अपने आपको जीत ले उसे महावीर कहते है ।
२) संत के पास जाकर संत न बन सको,
तो शांत जरूर बनो ।
३) माल पसंद आने पर ग्राहक पैसे अपने आप छोड देता है,
वैसे धर्म पसंद आने पर आत्मा पाप अपने आप छोड देती है ।
४) धन का काम मालदार बनाने का,
धर्म का काम दिलदार बनाने का ।
५) सदा न पानी बरसता, सदा न रहती धूप,
अवसर जान के बोलना, नही तो रहना चूप ।
६) कही कंकर मिलते है, काही पत्थर निकलते है,
जिन्हें अपना समझते है वही डेंजर निकलते है ।

भगवान महावीर का तप विवरण

पूर्णमासी	-	१	-	१८०	-	१
५ दिनन्यून	-	१	-	१७५	-	१
चातुर्मासिकतप	-	९	-	१०८०	-	९
त्रैमासिक	-	२	-	१८०	-	२
ढाईमासिक	-	२	-	१५०	-	२
डेडमासिक	-	२	-	१०	-	२
मासिक	-	१२	-	३६०	-	१२
अर्धमासिक	-	७२	-	१०८०	-	७२
अठ्ठम	-	१२	-	३६	-	१२
छठ्ठ	-	२२९	-	४५८	-	२२९
भद्रतप	-	१	-	२	-	०
महाभद्र	-	१	-	४	-	०
सर्वतोभद्र	-	१	-	१०	-	१
				४९६५		३४९

कु.निकीता साबद्रा, श्री.नीलेश बाफना, कु.अर्पिता बाफना
व्दारा अभूतपूर्व, अदभूत तप के साथ सेवा ।

दो शब्द

इस चातुर्मास में भगवान महावीर के उपर संकलित पुस्तक प्रकाशन करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है । ज्ञान पंचमी के शुभ अवसर पर पुज्य राजेशमुनिजी एवं राजेन्द्रमुनिजी म.सा.,सौ.आरती-अनिलजी छाजेड के निवास स्थान पर विराजे । मेरे छोटे भाई को प्राप्त इस शुभ अवसर पर यह छोटा सा संकलन आपको सोपते हुए मन में खुशी हो रही है । यह चातुर्मास हमारे लिए ही नही पूरे शहादा नगर के लिए अद्‌भूत एवं ऐतिहासिक रहा,मेरी माताजी श्री रमकूबाई चांदमलजी छाजेड के पूरे परिवार व्दारा एकासन का लाभ लिया गया । दिपावली का भक्ताम्बर प्रार्थना का लाभ भी मेरी भाभीजी हेमलता सुभाषजी छाजेड को प्राप्त हुआ । सारे लाभ का श्रेय पूज्य गुरूभगवंतो को जाता है ।

यह संकलन आपको नया महसूस होगा । एवं आपके ज्ञान में वृध्दि करेगा ।

संजय छाजेड